॥ॐ॥

।।ॐ श्री परमात्मने नमः।।

॥श्री गणेशाय नमः॥

रुद्रसूक्त

विषय-सूची

रुद्रसूक्त (नीलसूक्त)..... 3

रुद्रसूक्त [नीलसूक्त]

[शुक्ल यजुर्वेद १६। १-६६]

आदिपुरुष भगवान् सदाशिव को प्रसन्न करने के लिए रुद्रसूक्त के पाठ का विशेष महत्व है। भगवान् शिव के पूजन में रुद्राभिषेक की परम्परा है जिसमे रुद्रसूक्त का ही प्रमुखता से उच्चारण किया जाता है। रुद्राभिषेक के अन्तर्गत रुद्राष्टाध्यायी के पाठ में ग्यारह बार रुद्रसूक्त का उच्चारण करने पर ही पूर्ण रुद्राभिषेक माना जाता है। 'रुद्रसूक्त' आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक-त्रिविध तापोंसे मुक्त कराने तथा अमृतत्व की ओर अग्रसर करने का अन्यतम उपाय है।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः।
बाहुभ्यामुत ते नमः ॥१॥

ज्ञान प्रदान करनेवाले तथा समस्त दुखों का निवारण करने वाले हे रुद्र! आपके क्रोध को नमस्कार है, आपके बाणों को नमस्कार है और आपकी दोनों भुजाओं को भी नमस्कार है ॥१॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।

तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥२॥

हे गिरिशन्त ! हे रुद्र! आपका जो मंगलमय, सौम्य, पुण्यप्रकाशक शरीर है, उस अनन्त सुखकारक शरीर से हमारी तरफ देखिये, हमारी रक्षा कीजिये ॥२॥

यामिषु गिरिशन्त हस्ते बिभर्व्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः पुरुषं जगत् ॥३॥

हे गिरिशन्त ! हे सर्वज्ञ रुद्र ! शत्रुओं के विनाश के विनाश के लिये जिस बाण को आपने धारण किया है, वह हमारे लिए कल्याणकारक हो और आप हमारे पुत्र-पौत्र, गो, अश्व आदि का विनाश मत कीजिये ॥३॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमना असत् ॥४॥

हे कैलाश पर्वत पर शयन करनेवाले ! आपको प्रसन्न करने के लिए, आपको प्राप्त करने के लिये हम मंगलमय वचनो से आपकी स्तुति करते हैं। जिस प्रकार हमारा समस्त संसार तापरहित, निरोग और निर्मल मनवाला बने, वैसा आप करें ॥४॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहिंश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव ॥५॥

सर्वप्रथम वन्दनशील, देवताओं में प्रमुख, देवगणों का हित करनेवाले तथा समस्त रोगों का विनाश करनेवाले रुद्र मुझ पर

अतयधिक कृपा करें, जिससे मैं सर्वश्रेष्ठ हो जाऊँ। हे रुद्र! समस्त सर्प, व्याघ्र आदि हिंसक जीवों का नाश करते हुए आप अधोगमन कराने वाली राक्षसियों को हमसे दूर कर दें॥५॥

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चैनꣳ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाꣳ हेड ईमहे
॥६॥

उदयकाल में ताम्रवर्ण, अस्तकाल में अरुणवर्ण, अन्य समयमें पिंगल वर्ण तथा शुभमंगलों वाला जो यह सूर्यरूप है, वह रुद्र ही है। किरणरूप में ये जो हजारों रुद्र इन आदित्यों के सभी ओर स्थित हैं, इनके क्रोध का हम अपनी भक्तिमय उपासना से निवारण करते हैं ॥६॥

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः ।
उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥७॥

जिन्हें अज्ञानी गोप तथा जल भरनेवाली दासियाँ भी प्रत्यक्ष देख सकती हैं, हलाहल विष धारण करने से जिनका कण्ठ नीलवर्ण हो गया है, तथापि विशेषत: रक्तवर्ण होकर जो सर्वदा उदय और अस्त को प्राप्त होकर गमन करते हैं, वे रविमण्डलस्थित रुद्र हमें सुखी कर दें ॥७॥

नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः ॥ ८ ॥

नीलकण्ठ, सहस्रनेत्रवाले, इन्द्रस्वरूप और वृष्टि करने वाले रुद्रके लिये मेरा नमस्कार है। उस रुद्र के जो अनुचर हैं, उनके भी मैं नमस्कार करता हूँ ॥८॥

प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्योयम्।
याश्च ते हस्त इषवः परी ता भगवो वप॥ ९ ॥

हे भगवन् ! आप धनुषकी दोनों कोटियों के मध्य स्थित प्रत्यंचा का त्याग कर दें और धारण किए हुए बाणों को भी दूर फेंक कर हम पर अनुग्रह करें ॥९॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ उत।
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ॥१०॥

जटाजूट धारण करने वाले रुद्र का धनुष प्रत्यंचारहित रहे, तूणीर में स्थित बाणों के नोकदार अग्रभाग नष्ट हो जायँ, जो बाण धारण किये हैं, वे भी नष्ट हो जायें तथा इनके खड्ग रखने का कोश भी खड्गरहित हो जाय अर्थात् वे रुद्र हमारे प्रति सर्वथा करुणामय हो जायँ ॥१०॥

या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज ॥११॥

अत्यधिक वृष्टि करनेवाले हे रुद्र! आपके हाथमें जो धनुषरूप आयुध है, उसे सुदृढ़ तथा अनुपद्रवकारी धनुषसे हमारी सब ओर से रक्षा कीजिये ॥११॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम्॥ १२॥

हे रुद्र! आपका धनुषरूप आयुध सब ओर से हमारी सुरक्षा करे और आपका जो बाणों से भरा तरकश है, उसे हमसे दूर रखिये ॥१२॥

अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥१३॥

सौ तूणीर और सहस्र नेत्र धारण करनेवाले हे रुद्र ! धनुष की प्रत्यंचा को उतार कर और बाणों के अग्र भागों को तोड़कर आप हमारे प्रति शान्त और प्रसन्न हो जायें ॥१३॥

नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने ॥ १४॥

हे रुद्र ! शत्रुओं का विनाश करने में चतुर और धनुष पर न चढ़ाये गये आपके बाण के लिये हमारा प्रणाम है। आपकी दोनों बाहुओं और धनुष को भी हमारा प्रणाम है ॥१४॥

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः
॥१५॥

हे रुद्र! हमारे गुरु, पितृव्य आदि वृद्धजनों को मत मारिये, हमारे बालकों पर हिंसा मत कीजिये, हमारे तरुणों को मत मारिये, हमारे गर्भस्थ शिशु का विनाश मत कीजिये, हमारे माता-पिता की रक्षा कीजिये तथा हमारे प्रिय पुत्र-पौत्र आदि के प्रति हिंसा मत कीजिये ॥१५॥

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधी हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे
॥१६॥

हे रुद्र ! हमारे पुत्र-पौत्र आदि का विनाश मत कीजिये, हमारी आयु को नष्ट मत कीजिये, हमारी गौओं को मत मारिये, हमारे घोड़ों का विनाश मत कीजिये, हमारे क्रोधयुक्त वीरों की हिंसा मत कीजिये। हवि से युक्त होकर हम सभी सदा आपका आह्वाहन करते हैं ॥१६॥

नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमो
नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमो नमः
शष्पिजराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो नमो
हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतये नमः ॥१७॥

भुजाओं में स्वर्ण धारण करनेवाले सेनानायक रुद्र को नमस्कार है, दिशाओं के रक्षक रुद्र को नमस्कार है, पूर्णरूप हरे केशों वाले वृक्षरूप रुद्रों को नमस्कार है, जीवों का पालन करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, कान्तिमान् तृण के समान पीत वर्णवाले रुद्र को नमस्कार है, मार्गों के पालक रुद्र को नमस्कार है, नीलवर्ण-

केश से युक्त तथा मंगल के लिये यज्ञोपवीत धारण करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, गुणों से परिपूर्ण मनुष्यों के स्वामी रुद्र को नमस्कार है ॥१७॥

नमो बभ्लुशाय व्याधिने ऽन्नानां पतये नमो
नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो
नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमो नमः
सूतायाहन्त्यै वनानां पतये नमः॥१८॥

कपिल वर्णवाले तथा शत्रुओं को बेधने वाले रुद्र को नमस्कार है, अन्नों के पालक रुद्र को नमस्कार है, संसार के आयुधरूप रुद्र को नमस्कार है, जगत का पालन करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, उद्यत आयुधवाले रुद्र को नमस्कार है, देहों का पालन करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, रक्षा करनेवाले सारथिरूप रुद्र को नमस्कार है तथा वनों के रक्षक रुद्र को नमस्कार है ॥१८॥

नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो
नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनां पतये नमो
नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमो
नम उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनां पतये नमः ॥१९॥

लोहित वर्ण वाले तथा गृह आदि के निर्माता विश्वकर्मा रूप रुद्र को नमस्कार है, वृक्षों के पालक रुद्र को नमस्कार है, भुवन का विस्तार करने वाले तथा समृद्धिकारक रुद्र को नमस्कार है, ओषधियों के रक्षक रुद्र को नमस्कार है, आलोचन कुशल व्यापारकर्ता रूप रुद्र को नमस्कार है, वन, लता-वृक्ष आदि के पालक रुद्र को नमस्कार है, युद्ध में उग्र शब्द करनेवाले तथा

शत्रुओंको रुलाने वाले रुद्र को नमस्कार है, सेनाओं के पालक रुद्र को नमस्कार है ॥१९॥

नमः कृत्स्नायतया धावते सत्वनां पतये नमो नमः
सहमानाय निव्याधिन आव्याधिनीनां पतये नमो
नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो
नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमः ॥२०॥

कानों तक धनुष की प्रत्यंचा खींचकर युद्ध में तेजी से दौड़नेवाले रुद्र को नमस्कार हैं, शरणागत प्राणियों के पालक रुद्र को नमस्कार है, शत्रुओं का तिरस्कार करनेवाले तथा शत्रुओं को बेधनेवाले रुद्र को नमस्कार है, सब प्रकार से प्रहार करनेवाली शूर सेनाओं के रक्षक रुद्र को नमस्कार है, खड्ग चलानेवाले महान् रुद्र को नमस्कार है, गुप्त चोरों से रक्षा करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, अपहार की बुद्धि से निरन्तर गतिशील तथा हरण की इच्छा से आपण (बाजार)-वाटिका आदिमें विचरण करनेवाले तथा वनों के पालक रुद्र को नमस्कार है। ॥२०॥

नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो
निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणां पतये नमो नमः
सृकायिभ्यो जिघाꣳसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो
नमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः ॥२१॥

वंचना करनेवाले तथा अपने स्वामीको विश्वास दिलाकर धन हरण करनेवालों से रक्षा करनेवाले रुद्ररूप को नमस्कार है, गुप्त धन चुरानेवालों से रक्षा करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, बाण तथा तूणीर धारण करनेवाले रुद्र को नमस्कार हैं, प्रकटरूप में

चोरी करनेवालों से रक्षा करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, वज्र धारण करनेवाले तथा शत्रुओं को मारनेकी इच्छावाले रुद्र को नमस्कार है, खेतों में धान्य आदि चुरानेवालों से रक्षा करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, प्राणियों पर घात करने के लिये खड्ग धारणकर रात्रि में विचरण करनेवाले रुद्रों को नमस्कार है तथा दूसरोंको काटकर उनका धन हरण करनेवालों से रक्षा करनेवाले रुद्र को नमस्कार है ॥२१॥

नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये
नमो नम इधुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमो
नम आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नम
आयच्छद्भ्यो ऽस्यद्भ्यश्च वो नमः ॥२२॥

सिर पर पगड़ी धारण करके पर्वतादि दुर्गम स्थानों में विचरनेवाले रुद्र को नमस्कार है, छलपूर्वक दूसरों के क्षेत्र, गृह आदि का हरण करनेवालों रक्षा करनेवाले रुद्ररूप को नमस्कार है, लोगोंको भयभीत करने के लिये बाण धारण करनेवाले रुद्रों को नमस्कार है, धनुष धारण करनेवाले आप रुद्रों को नमस्कार है, धनुषपर प्रत्यंचा चढ़ानेवाले रुद्रों को नमस्कार है, धनुष पर बाण का संधान करनेवाले रुद्रों को नमस्कार है, धनुष को भलीभाँति खींचने वाले रुद्रों को नमस्कार है, बाणों को सम्यक् छोड़नेवाले आप रुद्रों को नमस्कार है ॥२२॥

नमो विसृजद्भ्यो विध्यङ्ग्यश्च वो नमो
नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो
नमः शयानेभ्य आसीनेभ्यश्च वो नमो नम

स्तिष्ठद्भ्रयो धावद्भ्यश्च वो नमः ॥२३॥

पापियों के दमन के लिये बाण चलानेवाले रुद्रों को नमस्कार है, शत्रुओं को बेधनेवाले रुद्रों को नमस्कार है, स्वप्नावस्था का अनुभव कराने वाले रुद्रों को नमस्कार है, जाग्रत् अवस्थावाले रुद्रों को नमस्कार है, सुषुप्ति अवस्थावाले रुद्रों को नमस्कार है, बैठे हुए रुद्रों को नमस्कार है, स्थिर रहनेवाले रुद्रों को नमस्कार है, वेगवान् गतिवाले रुद्रों को नमस्कार है ॥२३॥

नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो
नमोऽश्वेभ्यो ऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नम
आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो
नम उगणाभ्यस्तृऽहतीभ्यश्च वो नमः॥२४॥

सभारूप रुद्रों को नमस्कार हैं, सभापतिरूप आप रुद्रों को नमस्कार हैं, अश्वरूप रुद्रों को नमस्कार है, अश्वपतिरूप रुद्रों को नमस्कार है, सब प्रकार से बेधन करनेवाले देवसेनारूप रुद्रों को नमस्कार है, विशेषरूप से बेधन करनेवाले देवसेनारूप आप रुद्रों को नमस्कार है, उत्कृष्ट भृत्य-समूहोंवाली ब्राह्मी आदि मातास्वरूप रुद्रों को नमस्कार है और मारने में समर्थ दुर्गा आदि मातास्वरूप रुद्रों को नमस्कार है ॥२४॥

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो
व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो
गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो
विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ॥२५॥

देवानुचर भूतगणरूप रुद्रों को नमस्कार है, भूतगणों के अधिपतिरूप रुद्रों को नमस्कार है, भिन्न-भिन्न जातिसमूहरूप रुद्रों को नमस्कार है, विभिन्न जातिसमूहों के अधिपतिरूप रुद्रों को नमस्कार है, मेधावी ब्रह्मजिज्ञासुरूप रुद्रों को नमस्कार है, मेधावी ब्रह्मजिज्ञासुओं के अधिपतिरूप रुद्रों को नमस्कार है, निकृष्ट रूपवाले रुद्रों को नमस्कार है, नानाविध रूपोंवाले विश्वरूप रुद्रों को नमस्कार है ॥२५॥

नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो।
नमो रथिभ्यो अरथेभ्यश्च वो नमो नमः
क्षत्तृभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो
महद्भ्यो अर्भकेभ्यश्च वो नमः ॥२६॥

सेनारूप रुद्रों को नमस्कार है, सेनापतिरूप आप रुद्रों को नमस्कार है, रथीरूप रुद्रों को नमस्कार है, रथविहीन रुद्रों को नमस्कार है, रथों के अधिष्ठातारूप रुद्रों को नमस्कार है, सारथिरूप रुद्रों को नमस्कार है, जाति तथा विद्या आदि से उत्कृष्ट प्राणिरूप रुद्रों को नमस्कार है, प्रमाण आदि से अल्परूप रुद्रों को नमस्कार है ॥२६॥

नमस्तक्षेभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः
कुलालेभ्यः कमरेभ्यश्च वो नमो
नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः
श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः ॥२७॥

शिल्पकाररूप रुद्रों को नमस्कार है, रथनिर्मातारूप आप रुद्रों को नमस्कार हैं, कुम्भकाररूप रुद्रों को नमस्कार हैं,

लौहकाररूप आप रुद्रों को नमस्कार है, वन-पर्वतादिमें विचरनेवाले निषादरूप रुद्रों को नमस्कार है, पक्षियों को मारनेवाले पुल्कसादिरूप आप रुद्रों को नमस्कार हैं, श्वानों के गले में बँधी रस्सी धारण करनेवाले रुद्ररूपों को नमस्कार है और मृगों की कामना करनेवाले व्याधरूप आप रुद्रों को नमस्कार है ॥२७॥

नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च ॥२८॥

श्वानरूप रुद्रों को नमस्कार हैं, श्वानों के स्वामीरूप रुद्रों को नमस्कार है, प्राणियों के उत्पत्तिकर्ता रुद्र को नमस्कार हैं, दुःखोंके विनाशक रुद्र को नमस्कार है, पापोंका नाश करनेवाले रुद्रको नमस्कार है, पशुओं के रक्षक रुद्रको नमस्कार हैं, हलाहल पानके फलस्वरूप नीलवर्णके कण्ठवाले रुद्रको नमस्कार है और श्वेत कण्ठवाले रुद्र को नमस्कार है ॥२८॥

नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च ॥२९॥

जटाजूट धारण करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, मुण्डित केशवाले रुद्र को नमस्कार हैं, हजारों नेत्रवाले इन्द्ररूप रुद्र को नमस्कार है, सैकड़ों धनुष धारण करनेवाले रुद्र को नमस्कार हैं, कैलाश पर्वत पर शयन करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, सभी प्राणियों के अन्तर्यामी विष्णुरूप रुद्र को नमस्कार है, अत्यधिक सेवन

करनेवाले मेघरूप रुद्र को नमस्कार है और बाण धारण करनेवाले रुद्र को नमस्कार है ॥२९॥

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च
नमो वृद्धाय च सवृधे च नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च॥ ३०॥

अल्प देहवाले रुद्र को नमस्कार हैं, संकुचित अंगोंवाले वामनरूप रुद्र को नमस्कार है, बृहत्काय रुद्र को नमस्कार है, अत्यन्त वृद्धावस्थावाले रुद्र को नमस्कार है, अधिक आयुवाले रुद्र को नमस्कार है, विद्याविनयादिगुणों से सम्पन्न विद्वानों के साथीरूप रुद्र को नमस्कार है, जगत के आदिभूत रुद्र को नमस्कार है और सर्वत्र मुख्यस्वरूप रुद्र को नमस्कार है ॥३०॥

नम आशवे चाजिराय च नमः शीघ्रयाय च शीभ्याय च
नम ऊर्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्यायचे॥३१॥

जगदव्यापी रुद्र को नमस्कार है, गतिशील रुद्र को नमस्कार हैं, वेगवाली वस्तुओं में विद्यमान रुद्र को नमस्कार है, जलप्रवाह में विद्यमान आत्मश्लाघी रुद्र को नमस्कार है, जलतरंगों में व्याप्त रुद्र को नमस्कार है, स्थिर जलरूप रुद्र को नमस्कार है, नदियों में व्याप्त रुद्र को नमस्कार है और द्वीपों में व्याप्त रुद्र को नमस्कार है ॥३१ ॥

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च
नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्याय च ॥३२॥

अति प्रशस्य ज्येष्ठरूप रुद्र को नमस्कार है, अत्यन्त युवा रुद्र को नमस्कार है, जगत के आदिमें हिरण्यगर्भरूप से प्रादुर्भूत हुए रुद्र को नमस्कार है, प्रलय के समय कालाग्नि के सदृश रूप धारण करनेवाले रुद्र को नमस्कार हैं, सृष्टि और प्रलय के मध्य में देव नर-तिर्यगादिरूप से उत्पन्न होनेवाले रुद्र को नमस्कार है, अव्युत्पन्नेन्द्रिय रुद्र को नमस्कार है अथवा विनीत रुद्र को नमस्कार है, गाय आदि के जघन प्रदेश से उत्पन्न होनेवाले रुद्र को नमस्कार है और वृक्षादिकों के मूल में निवास करनेवाले रुद्र को नमस्कार है ॥३२॥

नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च
नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नम उर्वर्याय च खल्याय च॥३३॥

गन्धर्वनगर में उत्पन्न होने वाले रुद्र को नमस्कार है, प्रत्यभिचार में रहनेवाले रुद्र को नमस्कार है, पापियों को नरककी वेदना देनेवाले यम के अन्तर्यामी रुद्र को नमस्कार है, कुशलकर्म में रहनेवाले रुद्र को नमस्कार है, वेद के मन्त्र द्वारा उत्पन्न हुए रुद्र को नमस्कार है, वेदान्त के तात्पर्यविषयी भूत रुद्र को नमस्कार है, सर्वसस्य सम्पन्न पृथ्वी से उत्पन्न होनेवाले धान्यरूप रुद्र को नमस्कार हैं, धान्यविवेचन-देश में उत्पन्न हुए रुद्र को नमस्कार है। ॥३३॥

नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नम
आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च ॥३४॥

वनों में वृक्ष-लतादिरूप रुद्र अथवा वरुण स्वरूप रुद्रों को नमस्कार हैं, शुष्क तृण अथवा गुल्मों में रहनेवाले रुद्र को

नमस्कार है; प्रतिध्वनिस्वरूप रुद्र को नमस्कार है, शीघ्रगामी सेनावाले रुद्र को नमस्कार है, शीघ्रगामी रथवाले रुद्र को नमस्कार हैं, युद्ध में शूरता प्रदर्शित करनेवाले रुद्र को नमस्कार है तथा शत्रुओं को विदीर्ण करनेवाले रुद्र को नमस्कार है ॥३४॥

नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च
नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च॥३५॥

शिरस्त्राण धारण करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, कपास-निर्मित देहरक्षक धारण करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, लोहे का कवच धारण करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, गुम्बद्युक्त रथवाले रुद्र को नमस्कार है, संसार में प्रसिद्ध रुद्र को नमस्कार है, प्रसिद्ध सेनावाले रुद्र को नमस्कार है, दुन्दुभी में विद्यमान रुद्र को नमस्कार है, भेरी आदि वाद्योंको बजानेमें प्रयुक्त होनेवाले दण्ड आदि में विद्यमान रुद्र को नमस्कार है।। ॥३५॥

नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च।
नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे
चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च ॥३६॥

प्रगल्भ स्वभाववाले रुद्र को नमस्कार है, सत्-असत का विवेकपूर्वक विचार करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, खड्ग धारण करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, तूणीर धारण करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, तीक्ष्ण बाणोंवाले रुद्र को नमस्कार है, नानाविध आयुधों को धारण करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, उत्तम

त्रिशूलरूप आयुध धारण करनेवाले रुद्र को नमस्कार है और श्रेष्ठ पिनाक धनुष धारण करनेवाले रुद्र को नमस्कार है ॥३६॥

नमः स्रुतयाय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः
कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च॥३७॥

क्षुद्रमार्ग में विद्यमान रुद्र को नमस्कार है, रथ-गज अश्व आदि के योग्य विस्तृत मार्ग में विद्यमान रुद्र को नमस्कार है, दुर्गम मार्गों में स्थित रुद्र को नमस्कार है, जहाँ झरनोंका जल गिरता है, उस भूप्रदेशमें उत्पन्न हुए अथवा पर्वतों के अधोभागमें विद्यमान रुद्र को नमस्कार है, नहर के मार्ग में स्थित अथवा शरीरोंमें अन्तर्यामीरूपसे विराजमान रुद्र को नमस्कार है, सरोवरमें उत्पन्न होनेवाले रुद्र को नमस्कार है, सरितादिकों में विद्यमान जलरूप रुद्र को नमस्कार है, अल्प सरोवरमें रहनेवाले रुद्र को नमस्कार है ॥३७॥

नमः कुप्याय चावट्याय च नमो वीध्याय चातप्याय
नमो मेध्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च॥३८॥

कूपों में विद्यमान रुद्र को नमस्कार है, गर्त स्थानों में रहनेवाले रुद्र को नमस्कार है, शरद्-ऋतुके बादलों अथवा चन्द्र-नक्षत्रादि मण्डल में विद्यमान विशुद्ध स्वभाववाले रुद्र को नमस्कार है, आतप में उत्पन्न होनेवाले रुद्र को नमस्कार है, मेघों में विद्यमान रुद्र को नमस्कार हैं, विद्युत् में होनेवाले रुद्र को नमस्कार है, वृष्टि में विद्यमान रुद्र को नमस्कार है तथा अवर्षण में स्थित रुद्र को नमस्कार है ॥३८॥

नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च
नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च ॥३९॥

वायु में रहनेवाले रुद्र को नमस्कार है, प्रलयकाल में विद्यमान रुद्र को नमस्कार है, गृह-भूमि में विद्यमान रुद्र को नमस्कार है अथवा सर्वशरीरवासी रुद्र को नमस्कार है, गृहभूमि के रक्षकरूप रुद्र को नमस्कार है, चन्द्रमा में स्थित अथवा ब्रह्मविद्या महाशक्ति उमासहित विराजमान सदाशिव रुद्र को नमस्कार है, सर्वविध अनिष्ट के विनाशक रुद्र को नमस्कार है, उदित होनेवाले सूर्य के रूपमें ताम्रवर्ण के रुद्र को नमस्कार है और उदय के पश्चात् अरुण वर्णवाले रुद्र को नमस्कार है ॥३९॥

नमः शङ्गवे च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमोऽग्रेवधाय
च
दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो
नमस्ताराय ॥४०॥

भक्तों को सुख प्रदान करानेवाले रुद्र को नमस्कार है, जीवों के अधिपतिस्वरूप रुद्र को नमस्कार है, संहार-काल में प्रचण्ड स्वरूपवाले रुद्र को नमस्कार है, भयानकरूप धारण कर शत्रुओं को भयभीत करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, सामने खड़े होकर वध करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, दूर रहकर संहार करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, हनन करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, प्रलयकाल में सर्वहन्तारूप रुद्र को नमस्कार हैं, हरितवर्णके पत्ररूप केशोंवाले कल्पतरुस्वरूप रुद्र को नमस्कार है और ज्ञानोपदेशके द्वारा अधिकारी जनों को तारनेवाले रुद्र को नमस्कार है ॥४०॥

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥४१॥

सुख के उत्पत्तिस्थान रूप रुद्र को नमस्कार है, भोग तथा मोक्ष का सुख प्रदान करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, लौकिक सुख देनेवाले रुद्र को नमस्कार है, वेदान्त-शास्त्रमें होनेवाले ब्रह्मात्मैक्य साक्षात्कार स्वरूप रुद्र को नमस्कार है, कल्याणरूप निष्पाप रुद्र को नमस्कार है और अपने भक्तों को भी निष्पाप बनाकर कल्याणरूप कर देनेवाले रुद्र को नमस्कार है ॥४१॥

नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च
नमस्तीर्थ्याय च कुल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च ॥४२॥

संसार समुद्र के अपर तीर पर रहनेवाले अथवा संसारातीत जीवन्मुक्त विष्णुरूप रुद्र को नमस्कार है, संसारव्यापी रुद्र को नमस्कार हैं, दुःख-पापादि से प्रकट रूपसे तारनेवाले रुद्र को नमस्कार है, उत्कृष्ट ब्रह्म-साक्षात्कार करा कर संसारसे तारनेवाले रुद्र को नमस्कार है, तीर्थस्थलों में प्रतिष्ठित रहनेवाले रुद्र को नमस्कार है, गंगा आदि नदियों के तट पर विद्यमान रहनेवाले रुद्र को नमस्कार हैं, गंगा आदि नदियों के तटपर उत्पन्न रहनेवाले कुशांकुरादि बाल तृण रूप रुद्र को नमस्कार है और जल के विकारस्वरूप फेन में विद्यमान रहनेवाले रुद्र को नमस्कार है ॥४२॥

नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः किञ्शिलाय च क्षयणाय च
नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च॥४३॥

नदियों की बालुकाओं में विद्यमान रुद्र को नमस्कार है, नदी आदि के प्रवाह में विद्यमान रुद्र को नमस्कार है, क्षुद्र पाषाणोंवाले प्रदेश के रूप में विद्यमान रुद्र को नमस्कार है, स्थिर जल से परिपूर्ण प्रदेश रूप रुद्र को नमस्कार है, जटामुकुटधारी रुद्र को नमस्कार है, शुभाशुभ देखने की इच्छा से सदा सामने खड़े रहनेवाले अथवा सर्वान्तर्यामीस्वरूप रुद्र को नमस्कार है, ऊसरभूमिरूप रुद्र को नमस्कार हैं और अनेक जनों से संसेवित मार्ग में होनेवाले रुद्र को नमस्कार है ॥४३॥

नमो वज्रयाय च गोष्ठ्याय च नम स्तल्प्यायच गैह्याय च
नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च
॥४४॥

गोसमूह में विद्यमान अथवा व्रज में गोपेश्वर के रूप में रहनेवाले रुद्र को नमस्कार है, गोशालाओं में रहनेवाले गोष्ठ्यरूप रुद्र को नमस्कार है, शय्या में विद्यमान रुद्र को नमस्कार है, गृह में विद्यमान रुद्र को नमस्कार है, हृदय में विराजमान जीव रुपी रुद्र को नमस्कार है, जल के भंवर में रहनेवाले रुद्र को नमस्कार है, दुर्ग-अरण्य आदि स्थानों में रहनेवाले रुद्र को नमस्कार है और विषम गिरिगुहा आदि अथवा गम्भीर जल में विद्यमान रुद्र को नमस्कार है ॥४४॥

नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पाꣳव्याय च रजस्याय च
नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऊवर्याय च सूर्याय च ॥४५॥

काष्ठ आदि शुष्क पदार्थों में भी सत्तारूपसे विद्यमान रुद्र को नमस्कार है, आर्द्र काष्ठ आदि में सत्तारूपसे विद्यमान रुद्र को नमस्कार है, धूलि आदि में विराजमान पांसव्यरूप रुद्र को नमस्कार हैं, रजोगुण अथवा पराग में विद्यमान रजस्यरूप रुद्र को नमस्कार है, सम्पूर्ण इन्द्रियोंके व्यापार को शान्ति होने पर भी अथवा प्रलय में भी साक्षी बनकर रहनेवाले रुद्र को नमस्कार हैं, बल्वजादि तृणविशेषों में होनेवाले उलप्यरूपी रुद्र को नमस्कार है, बडवानल में विराजमान रुद्र को नमस्कार है और प्रलयाग्नि में विद्यमान रुद्र को नमस्कार है ॥४५ ॥

नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नम उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च
नम आखिदते च प्रखिदते च नम इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो
नमो
नमो वः किरिकेभ्यो देवानाꣳ हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो
नमो विक्षिणत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यः ॥४६॥

वृक्षों के पत्ररूप रुद्र को नमस्कार है, वृक्ष-पर्णो के स्वतः शीर्ण होने के काल–वसन्त-ऋतुरूप रुद्र को नमस्कार है, पुरुषार्थपरायण रहनेवाले रुद्र को नमस्कार है, सब ओर शत्रुओंका हनन करनेवाले रुद्र को नमस्कार है, सब ओर से अभक्तों को दीन-दुःखी बना देनेवाले रुद्र को नमस्कार हैं, अपने भक्तों के दुःखों से दुःखी होने के कारण दया से आर्द्रहृदय होनेवाले रुद्र को नमस्कार है, बाणों का निर्माण करनेवाले रुद्रों को नमस्कार है, धनुषों का निर्माण करनेवाले रुद्रों को नमस्कार हैं, वृष्टि आदिके द्वारा जगत्का पालन करनेवाले देवताओं के हृदयभूत अग्नि-वायु-आदित्यरूप रुद्रों को नमस्कार है, धर्मात्मा

तथा पापियों का भेद करनेवाले अग्नि आदि रुद्रों को नमस्कार है, भक्तोंके पाप-रोग अमंगलको दूर करनेवाले तथा पाप-पुण्य के साक्षीस्वरूप अग्नि आदि रुद्रों को नमस्कार है और सृष्टि के आदि में मुख्यतया इन लोकों से निर्गत हुए अग्नि-वायु-सूर्यरूप रुद्रों को नमस्कार है ॥४६॥

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित।
आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा
रोमो च नः किंचनाममत् ॥ ४७॥

हे द्रापे (दुराचारियोंको कुत्सित गति प्राप्त करानेवाले) ! हे अन्धसस्पते (सोमपालक) ! हे दरिद्र (निष्परिग्रह)! हे नीललोहित ! हमारी पुत्रादि प्रजाओं तथा गो-आदि पशुओंको भयभीत मत कोजिये, उन्हें नष्ट मत कीजिये और उन्हें किसी भी प्रकार के रोगसे ग्रसित मत कीजिये ॥४७॥

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥४८॥

जिस प्रकारसे मेरे पुत्रादि तथा गौ आदि पशुओं को कल्याण की प्राप्ति हो तथा इस ग्राम में सम्पूर्ण प्राणी पुष्ट तथा उपद्रवरहित हों, इसके निमित्त हम अपनी इन बुद्धियों को महाबली, जटाजूटधारी तथा शूरवीरोंके निवासभूत रुद्र को समर्पित करते हैं। ॥४८॥

या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी।

शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे ॥४९॥

हे रुद्र! आपका जो शान्त, निरन्तर कल्याणकारक, संसार की व्याधि निवृत्त करनेवाला तथा शारीरिक व्याधि दूर करनेका परम औषधिरूप शरीर है, उससे हमारे जीवन को सुखी कीजिये ॥४९॥

परि नो रुद्रस्य हेतिवृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः।
अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड॥५०॥

रुद्र के आयुध हमारा परित्याग करें और क्रुद्ध हुए द्वेषी पुरुषों की दुर्बुद्धि हमलोगों किसी प्रकार की कोई भी पीड़ा न पहुंचाए। अभिलषित वस्तुओंकी वृष्टि करनेवाले हे रुद्र ! आप अपने धनुषको प्रत्यंचारहित करके यजमान-पुरुषों के भय को दूर कीजिये और उनके पुत्र-पौत्रों को सुखी बनाइये ॥५०॥

मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव।
परमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्तिं वसान आ चर पिनाकं बिभ्रदा गहि ॥५१॥

अभीष्ट फल और कल्याणों की अत्यधिक वृष्टि करनेवाले हे रुद्र! आप हम पर प्रसन्न रहें, अपने त्रिशूल आदि आयुधों को कहीं दूरस्थित वृक्षों पर रख दीजिये, गजचर्म का परिधान धारण करके तप कीजिये और केवल शोभा को धनुष धारण करके आइये ॥५१॥

विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः।

यास्ते सहस्रꣳ हेतयोऽन्यमस्मन्नि वपन्तु ताः ॥५२॥

विविध प्रकारके उपद्रवों का विनाश करनेवाले तथा शुद्ध स्वरूपवाले हे रुद्र! आपको हमारा प्रणाम है, आपके जो असंख्य आयुध हैं, वे हमसे अतिरिक्त दूसरों पर जाकर गिरें ॥५२॥

सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि॥५३॥

गुण तथा ऐश्वर्यों से सम्पन्न हे जगत्पति रुद्र! आपके हाथों में हजारों प्रकार के जो असंख्य आयुध हैं, उनके अग्रभागों (मुखों)-को हमसे विपरीत दिशाओंकी ओर कर दीजिये (अर्थात् हमपर आयुधोंका प्रयोग मत कीजिये) ॥५३॥

असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥५४॥

पृथ्वी पर जो असंख्य रुद्र निवास करते हैं, उनके असंख्य धनुष को प्रत्यंचारहित करके हमलोग हजारों कोसों के पार जो मार्ग है, उस पर ले जाकर डाल देते हैं ॥५४॥

अस्मिन् महत्यर्णवे ऽन्तरिक्षे भवा अधि।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥५५॥

मेघमण्डलसे भरे हुए इस महान् अन्तरिक्षमें जो रुद्र रहते हैं, उनके असंख्य धनुषोंको प्रत्यंचारहित करके हमलोग हजारों कोसों के पारस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं ॥५५॥

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्रा उपश्रिताः।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५६॥

जिनके कण्ठ का कुछ भाग नीलवर्ण का है और कुछ भाग श्वेत वर्ण का है तथा जो द्युलोक में निवास करते हैं, उन रुद्रों के असंख्य धनुषको प्रत्यंचारहित करके हमलोग हजारों कोस दूर स्थित मार्ग पर ले जाकर डाल देते हैं ॥५६॥

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५७॥

कुछ भागमें नीलवर्ण और कुछ भागमें शुक्लवर्ण के कण्ठवाले तथा भूमि के अधोभागमें स्थित पाताललोक में निवास करनेवाले रुद्रों के असंख्य धनुष को प्रत्यंचारहित करके हमलोग हजारों कोस दूरस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं। ॥५७॥

ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५८॥

बाल तृण के समान हरितवर्ण के तथा कुछ भागमें नीलवर्ण एवं कुछ भाग में शुक्लवर्ण के कण्ठवाले, जो रुधिररहित रुद्र (तेजोमय शरीर रहनेसे उन शरीरोंमें रक्त और मांस नहीं रहता)

हैं, वे अश्वत्थ आदिके वृक्षों पर रहते हैं। उन रुद्रों के धनुष को प्रत्यंचारहित करके हमलोग हजारों कोसों के पारस्थित मार्गपर डाल देते हैं। ॥५८॥

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥५९॥

जिनके सिर पर केश नहीं हैं, जिन्होंने जटा जूट धारण कर रखा है और जो पिशाचों के अधिपत्ति हैं, उन रुद्रों के धनुषोंको प्रत्यंचारहित करके हमलोग हजारों कोसों के पारस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं। ॥५९॥

ये पथ पथिरक्षय ऐलबृदा आयुयुधः।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥६०॥

अन्न देकर प्राणियोंका पोषण करनेवाले, आजीवन युद्ध करनेवाले, लौकिक-वैदिक मार्गका रक्षण करनेवाले तथा अधिपति कहलानेवाले जो रुद्र हैं, उनके धनुषोंको प्रत्यंचारहित करके हमलोग हजारों कोसोंके पारस्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं ॥६०॥

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥६१॥

वज्र और खड्ग आदि आयुधोंको हाथमें धारणकर जो रुद्र तीर्थोपर जाते हैं, उनके धनुषोंको प्रत्यंचारहित करके हमलोग हजारों कोसों के पारस्थित मार्ग पर ले जाकर डाल देते हैं ॥६१॥

येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥६२॥

खाये जानेवाले अन्नों में स्थित जो रुद्र अन्नभोक्ता प्राणियों को पीड़ित करते हैं और पात्रों में स्थित दुग्ध आदि में विराजमान जो रुद्र उनका पान करनेवाले लोगों को कष्ट देते हैं, उनके धनुषों को प्रत्यंचारहित करके हमलोग हजारों कोस दूर स्थित मार्गपर ले जाकर डाल देते हैं ॥६२॥

य एतावन्तश्च भूयाꣳसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥६३॥

दसों दिशाओं में व्याप्त रहनेवाले जो अनेक रुद्र हैं, उनके धनुष को प्रत्यंचारहित करके हमलोग हजारों कोस दूरस्थित मार्ग पर ले जाकर डाल देते हैं। ॥६३॥

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः।
तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोध्वाः
तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते
यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥६४॥

जो रुद्र द्युलोक में विद्यमान हैं तथा जिन रुद्रों के बाण वृष्टिरूप हैं, उन रुद्रों को नमस्कार हैं। उन रुद्रों को पूर्व दिशा की ओर हाथ जोड़कर को प्रणाम करता हूँ, दक्षिण की और हाथ जोड़कर को प्रणाम करता हूँ, पश्चिमकी ओर हाथ जोड़कर को प्रणाम करता हूँ, उत्तर की ओर हाथ जोड़कर को प्रणाम करता हूँ और ऊपर की ओर हाथ जोड़कर को प्रणाम करता हूँ। वे रुद्र हमारी रक्षा करें और वे हमें सुखी बनायें। वे रुद्र जिस मनुष्य से द्वेष करते हैं, हमलोग जिससे द्वेष करते हैं और जो हमसे द्वेष करता है, उस पुरुष को हमलोग उन रुद्रों के भयंकर दाँतोंवाले मुख में डालते हैं ॥६४॥

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषवः।
तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोध्वाः
तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते ।
यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥६५॥

जो रुद्र अन्तरिक्ष में विद्यमान हैं तथा जिन रुद्रों के बाण पवनरूप हैं, उन रुद्रों को नमस्कार है। उन रुद्रों को पूर्व दिशाकी ओर हाथ जोड़कर को प्रणाम करता हूँ, दक्षिणकी ओर हाथ जोड़कर को प्रणाम करता हूँ, पश्चिमकी ओर हाथ जोड़कर को प्रणाम करता हूँ, उत्तरकी ओर हाथ जोड़कर को प्रणाम करता हूँ और ऊपरकी ओर हाथ जोड़कर को प्रणाम करता हूँ। वे रुद्र हमारी रक्षा करें और सुखी बनायें । वे रुद्र जिस मनुष्यसे द्वेष करते हैं, हमलोग जिससे द्वेष करते हैं और जो हमसे द्वेष करता है, उस पुरुषको हमलोग उन रुद्रों के भयंकर दाँतोंवाले मुख में डालते हैं ॥६५॥

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः।
तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः
तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते
यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥६६॥

जो रुद्र पृथ्वीलोकमें स्थित हैं तथा जिनके बाण अन्नरूप हैं, उन रुद्रों को नमस्कार है। उन रुद्रों को पूर्व दिशाकी ओर हाथ जोड़कर को प्रणाम करता हूँ, दक्षिणकी ओर हाथ जोड़कर को प्रणाम करता हूँ, पश्चिमकी ओर हाथ जोड़कर को प्रणाम करता हूँ, उत्तरकी ओर हाथ जोड़कर को प्रणाम करता हूँ और ऊपरकी ओर हाथ जोड़कर को प्रणाम करता हूँ। वे रुद्र हमारी रक्षा करें और सुखी बनायें । वे रुद्र जिस मनुष्यसे द्वेष करते हैं, हमलोग जिससे द्वेष करते हैं और जो हमसे द्वेष करता है, उस पुरुष को हमलोग उन रुद्रों के भयंकर दाँतोंवाले मुख में डालते हैं ॥६६॥

संकलनकर्ता:

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय:।।